Gyanvividha, Vol.-3; Issue-3 (July-September) 2026 : PP-16-20

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषयों की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध-पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-6.125
Vol.-3; Issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No.- 16-20
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. प्रभात सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग,
के. बी. पी. जी. कालेज, मीरजापुर, उ. प्र.

Corresponding Author :

डॉ. प्रभात सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग,
के. बी. पी. जी. कालेज, मीरजापुर, उ. प्र.

जनसंख्या का वृद्ध होना और क्षेत्रीय विकास : भारत के संदर्भ में इक्कीसवीं सदी में चुनौतियाँ और अवसर

सारांश : आबादी का बूढ़ा होना इक्कीसवीं सदी के सबसे अहम डेमोग्राफिक बदलावों में से एक बनकर उभरा है। घटती प्रजनन दर, बढ़ती जीवन प्रत्याशा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण कई देशों में बुजुर्गों की आबादी का अनुपात बढ़ा है। हालाँकि आबादी का बूढ़ा होना सामाजिक और आर्थिक तरक्की को दिखाता है, लेकिन यह क्षेत्रीय विकास, लेबर मार्केट, स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों और सार्वजनिक वित्त के लिए चुनौतियाँ भी पैदा करता है। आर्थिक स्थितियों, पलायन के पैटर्न और विकास के स्तर के आधार पर अलग–अलग क्षेत्रों में उम्र बढ़ने के असर अलग–अलग होते हैं। यह पेपर आबादी के बूढ़े होने और क्षेत्रीय विकास के बीच संबंध की जाँच करता है, जिसमें डेमोग्राफिक रुझानों, सामाजिक–आर्थिक प्रभावों, क्षेत्रीय असमानताओं और नीतिगत प्रतिक्रियाओं का पता लगाया गया है। अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि बूढ़ी होती आबादी के लिए स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक सुरक्षा, लेबर–फोर्स में भागीदारी और क्षेत्रीय योजना के मामले में नए तरीकों की जरूरत है। पेपर इस नतीजे पर पहुँचता है कि बूढ़ी होती आबादी वाले समाजों में टिकाऊ क्षेत्रीय विकास ऐसी समावेशी नीतियों को अपनाने पर निर्भर करता है जो सक्रिय रूप से उम्र बढ़ने, तकनीकी इनोवेशन और संतुलित डेमोग्राफिक विकास को बढ़ावा देती हैं।

कीवर्ड : आबादी का बूढ़ा होना, क्षेत्रीय विकास, जनसांख्यिकीय बदलाव, बुजुर्ग आबादी, पलायन, श्रम शक्ति, टिकाऊ विकास।

परिचय : आबादी के बूढ़े होने का मतलब है किसी आबादी में बुजुर्ग लोगों का अनुपात बढ़ना। यह दुनिया भर में हो रहे सबसे बड़े जनसांख्यिकीय बदलावों में से एक है। अंतरराष्ट्रीय संगठनों के अनुमानों के अनुसार, 65 साल और उससे ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या किसी भी दूसरे आयु वर्ग की तुलना में तेजी से बढ़ रही है। यह ट्रेंड गिरती जन्म दर और बढ़ती जीवन प्रत्याशा (सपमि म•चमबजंदबल) के कारण है, जो चिकित्सा, पोषण, स्वच्छता और जीवन स्तर में सुधार का नतीजा है। यह स्थिति खास तौर पर जापान, जर्मनी और इटली जैसे विकसित देशों में देखी जा सकती है, लेकिन कई विकासशील देशों में भी आबादी तेजी से बूढ़ी हो रही है। चीन, भारत, ब्राजील और थाईलैंड जैसे देश जनसांख्यिकीय बदलाव के ऐसे दौर में प्रवेश कर रहे हैं जहाँ बुजुर्ग आबादी में काफी बढ़ोतरी हो रही है।

आबादी के बूढ़े होने का क्षेत्रीय विकास पर दूरगामी असर पड़ता है। जिन क्षेत्रों में आबादी बूढ़ी हो रही है, वहाँ अक्सर श्रम की कमी, घटती आर्थिक उत्पादकता, बढ़ती स्वास्थ्य सेवा लागत और पेंशन सिस्टम पर दबाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही, बूढ़ी होती आबादी नए उद्योगों, स्वास्थ्य सेवा में इनोवेशन और 'सिल्वर इकॉनमी' (बुजुर्गों से जुड़ी अर्थव्यवस्था) के विस्तार के अवसर भी पैदा करती है। इसलिए, नीति–निर्माताओं और योजनाकारों के लिए आबादी के बूढ़े होने और क्षेत्रीय

विकास के बीच के संबंध को समझना जरूरी है।

अध्ययन के उद्देश्य : इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- आबादी के बूढ़े होने की प्रक्रिया (population ageing) की अवधारणा और कारणों की जाँच करना।
- बूढ़ी होती आबादी में क्षेत्रीय अंतर का विश्लेषण करना।
- आबादी के बूढ़े होने के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का आकलन करना।
- बुढ़ापे और क्षेत्रीय विकास के बीच संबंध का मूल्यांकन करना।
- बूढ़ी होती आबादी वाले समाजों में टिकाऊ विकास के लिए नीतिगत उपाय सुझाना।

विधितंत्र : यह अध्ययन एकेडमिक जर्नल्स, सरकारी रिपोर्टों, जनगणना प्रकाशनों और संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टों से इकट्ठा किए गए सेकेंडरी डेटा पर आधारित है। जनसांख्यिकीय रुझानों और क्षेत्रीय विकास पर उनके प्रभावों की जाँच करने के लिए वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। अलग–अलग क्षेत्रों में बुढ़ापे के पैटर्न और उनके प्रभावों को समझने के लिए संबंधित साहित्य और सांख्यिकीय डेटा की समीक्षा की गई है।

भारत में आबादी के बूढ़े होने की अवधारणा : भारत में आबादी के बूढ़े होने का मतलब है कुल आबादी में बुजुर्गों (60 साल और उससे ज़्यादा उम्र के लोग) की हिस्सेदारी का धीरे–धीरे बढ़ना। ऐसा जन्म दर में कमी और औसत उम्र (लाइफ एक्सपेक्टेंसी) बढ़ने के कारण हो रहा है। यह भारत में आबादी के बदलाव (डेमोग्राफिक ट्रांजिशन) का एक अहम पहलू है, जो स्वास्थ्य सेवा, पोषण, साफ–सफाई और जीवन–स्तर में सुधार को दिखाता है। हालांकि भारत को अभी भी एक युवा देश माना जाता है, लेकिन पिछले कुछ दशकों में बुजुर्गों की हिस्सेदारी लगातार बढ़ी है। 'इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023' के अनुसार, 2050 तक बुजुर्गों की आबादी कुल आबादी का 20 प्रतिशत से ज़्यादा हो सकती है, जबकि 2021 में यह लगभग 10 प्रतिशत थी। रिपोर्ट में यह भी अनुमान लगाया गया है कि 2046 तक, बुजुर्गों की संख्या 0–15 साल के बच्चों की आबादी से ज़्यादा हो सकती है।

भारत में आबादी के बूढ़े होने की प्रक्रिया में क्षेत्रीय अंतर भी दिखता है। केरल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश और पंजाब जैसे राज्यों में राष्ट्रीय औसत की तुलना में बूढ़े लोगों की संख्या ज़्यादा है, क्योंकि यहाँ जन्म दर कम है और औसत उम्र ज़्यादा है। इस प्रक्रिया में ''बुढ़ापे का नारीकरण'' (मिउपदप्रंजपवद वि हमपदह) भी देखा जाता है, क्योंकि महिलाएं पुरुषों की तुलना में ज़्यादा समय तक जीवित रहती हैं। आबादी में इस बदलाव का स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक सुरक्षा, रोजगार, पारिवारिक सहयोग व्यवस्था और क्षेत्रीय विकास पर महत्वपूर्ण असर पड़ता है, जिससे यह भारत के भविष्य के लिए नीतिगत स्तर पर एक अहम मुद्दा बन जाता है।

भारत में आबादी के बूढ़े होने के कारण : भारत में आबादी का बूढ़ा होना मुख्य रूप से डेमोग्राफिक ट्रांजिशन (जनसांख्यिकीय बदलाव) का नतीजा है, जिसमें जन्म दर में कमी और जीवन प्रत्याशा (औसत उम्र) में बढ़ोतरी शामिल है। इसका एक अहम कारण पिछले कुछ दशकों में जन्म दर में आई भारी कमी है। शिक्षा तक बेहतर पहुँच (खासकर महिलाओं के लिए), परिवार नियोजन के बारे में जागरूकता, शहरीकरण और बदलती सामाजिक–आर्थिक उम्मीदों ने छोटे परिवारों को बढ़ावा दिया है। जैसे–जैसे कम बच्चे पैदा हो रहे हैं, आबादी में बुजुर्गों का अनुपात धीरे–धीरे बढ़ रहा है। एक और बड़ा कारण स्वास्थ्य सेवाओं और जीवन–स्तर में सुधार है। मेडिकल टेक्नोलॉजी में तरक्की, टीकाकरण कार्यक्रमों का विस्तार, बेहतर पोषण, बेहतर साफ–सफाई और स्वास्थ्य सुविधाओं तक आसान पहुँच ने मृत्यु दर को कम किया है और जीवन प्रत्याशा को बढ़ाया है। नतीजतन, पहले के मुकाबले अब ज़्यादा लोग बुढ़ापे तक जीवित रह रहे हैं।

आर्थिक विकास ने भी जीवन–स्तर को बेहतर बनाकर और गरीबी से होने वाली मौतों को कम करके आबादी के बूढ़े होने की प्रक्रिया में योगदान दिया है। इसके अलावा, कई इलाकों में पलायन (माइग्रेशन) का पैटर्न भी आबादी के बूढ़े होने पर असर डालता है। युवा अक्सर नौकरी की तलाश में ग्रामीण इलाकों से शहरों की ओर चले जाते हैं, जिससे ग्रामीण समुदायों में मुख्य रूप से बुजुर्ग आबादी ही पीछे रह जाती है। संक्रामक बीमारियों में कमी और माँ व बच्चे की सेहत में सुधार ने सभी उम्र के लोगों के जीवित रहने की दर को और बेहतर बनाया है। इन सभी जनसांख्यिकीय और सामाजिक–आर्थिक बदलावों ने भारत में आबादी के बूढ़े होने की प्रक्रिया को तेज कर दिया है, जिससे स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक सुरक्षा, बुजुर्गों की देखभाल और क्षेत्रीय विकास से जुड़ी नई चुनौतियाँ पैदा हुई हैं।

आबादी के बूढ़े होने के वैश्विक रुझान : आबादी का बूढ़ा होना एक अहम जनसांख्यिकीय रुझान है, जिसमें दुनिया की आबादी में बुजुर्गों का हिस्सा बढ़ रहा है। यह बदलाव मुख्य रूप से घटती प्रजनन दर और स्वास्थ्य सेवा, पोषण और जीवन स्तरमें सुधार के कारण बढ़ती जीवन प्रत्याशा की वजह से हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र की 'विश्व पॉपुलेशन प्रॉस्पेक्ट्स 2024' रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में 65 वर्ष और उससे अधिक उम्र की वैश्विक आबादी लगभग 857 मिलियन तक पहुंच गई, जो दुनिया की कुल आबादी का लगभग 10.3% है। अनुमान है कि 2050 तक यह संख्या बढ़कर 1.6 बिलियन हो जाएगी, जब बुजुर्ग वैश्विक आबादी का लगभग 16% हिस्सा होंगे। आबादी के बूढ़े होने की प्रक्रिया विकसित क्षेत्रों में सबसे ज़्यादा देखी जा रही है। यूरोप में बुजुर्गों की हिस्सेदारी सबसे अधिक है, जहाँ की लगभग 21% आबादी 65 वर्ष और उससे अधिक उम्र की है। जापान, इटली और जर्मनी जैसे देशों में दुनिया की सबसे अधिक उम्रदराज आबादी वाले समाज हैं। जापान में बुजुर्गों की आबादी उसकी कुल आबादी के 29% से अधिक है, जिससे यह दुनिया के सबसे अधिक उम्रदराज समाजों में से एक बन

गया है।

विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में आबादी के बूढ़े होने की प्रक्रिया तेजी से हो रही है। एशिया में बड़ी आबादी के कारण सबसे ज्यादा बुजुर्ग लोग रहते हैं। 2024 में चीन में 65 साल और उससे ज्यादा उम्र के लगभग 216 मिलियन लोग थे, जबकि भारत में लगभग 108 मिलियन बुजुर्ग थे; उम्मीद है कि 2050 तक यह संख्या 230 मिलियन से ज्यादा हो जाएगी। लैटिन अमेरिका और कैरिबियन में भी तेजी से आबादी बूढ़ी हो रही है, और सदी के मध्य तक वहाँ बुजुर्गों की संख्या दोगुनी होने का अनुमान है। दुनिया भर में औसत उम्र (लाइफ एक्सपेक्टेंसी) में काफी बढ़ोतरी हुई हैय यह 1950 में 46 साल थी जो 2024 में बढ़कर लगभग 73 साल हो गई है। साथ ही, दुनिया भर में प्रजनन दर (फर्टिलिटी रेट) भी घटी है—1950 में यह प्रति महिला 5.0 बच्चे थी, जो आज घटकर प्रति महिला लगभग 2.3 बच्चे हो गई है।

आबादी से जुड़े ये बदलाव दुनिया भर में अर्थव्यवस्थाओं, लेबर मार्केट, हेल्थकेयर सिस्टम और सामाजिक कल्याण की नीतियों को बदल रहे हैं। सरकारों के सामने तेजी से बूढ़ी होती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के साथ–साथ टिकाऊ विकास सुनिश्चित करने की चुनौती भी बढ़ रही है।

भारत में आबादी का बूढ़ा होना और क्षेत्रीय विकास : भारत में आबादी का बूढ़ा होना एक अहम डेमोग्राफिक (जनसांख्यिकीय) और विकास से जुड़ा मुद्दा बनकर उभरा है। हालांकि भारत को अक्सर एक युवा देश कहा जाता है, लेकिन जन्म दर में कमी और जीवन प्रत्याशा (सपमि म•चमबजंदबल) में बढ़ोतरी के कारण 60 साल और उससे ज्यादा उम्र के बुजुर्गों की संख्या लगातार बढ़ रही है। 'इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023' के अनुसार, बुजुर्ग आबादी के 2022 में लगभग 149 मिलियन (कुल आबादी का 10.5%) से बढ़कर 2050 तक लगभग 347 मिलियन होने की उम्मीद है, जो कुल आबादी का 20% से ज्यादा होगा। आबादी में इस बदलाव का देश भर में क्षेत्रीय विकास पर गहरा असर पड़ता है।

आबादी के बूढ़े होने का असर अलग–अलग राज्यों और क्षेत्रों में काफी अलग–अलग होता है। केरल और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी राज्यों के साथ–साथ पंजाब और हिमाचल प्रदेश में कम जन्म दर और ज्यादा जीवन प्रत्याशा के कारण आबादी में बुजुर्गों का अनुपात अपेक्षाकृत ज्यादा है। इसके उलट, बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में आबादी का ढांचा अभी भी युवा है। ये क्षेत्रीय अंतर आर्थिक विकास के पैटर्न, स्वास्थ्य सेवा की मांग, श्रम की उपलब्धता और सामाजिक कल्याण की जरूरतों पर असर डालते हैं। बढ़ती उम्र वाली आबादी, काम करने की उम्र के लोगों की संख्या कम करके और बुजुर्गों पर निर्भरता का अनुपात बढ़ाकर क्षेत्रीय विकास पर असर डाल सकती है। कई ग्रामीण इलाकों से युवा शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं, जिससे पीछे सिर्फ बुजुर्ग आबादी रह जाती है। इसके नतीजे में खेती में मजदूरों की कमी, आर्थिक उत्पादकता में गिरावट और स्वास्थ्य सेवा व सामाजिक सहायता प्रणालियों पर दबाव बढ़ सकता है। साथ ही, शहरी इलाकों में बुजुर्गों के अनुकूल बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य सुविधाओं और सामाजिक सेवाओं की मांग भी बढ़ रही है।

हालांकि, आबादी का बुजुर्ग होना कुछ अवसर भी लाता है। बढ़ती बुजुर्ग आबादी स्वास्थ्य सेवा, दवा, बीमा और देखभाल (केयरगिविंग) जैसे क्षेत्रों के विकास में योगदान देती है, जिसे अक्सर ''सिल्वर इकॉनमी'' कहा जाता है। सक्रिय रूप से बुजुर्ग जीवन जीने को बढ़ावा देना, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बेहतर बनाना, पेंशन प्रणालियों को मजबूत करना और बुजुर्गों के अनुकूल समुदाय बनाना, बुजुर्ग आबादी को समावेशी क्षेत्रीय विकास का एक जरिया बनाने में मदद कर सकता है। इसलिए, भारत में संतुलित और टिकाऊ विकास सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय योजना में आबादी से जुड़े रुझानों को शामिल करना जरूरी है।

भारत में बढ़ती उम्र की आबादी से जुड़े अवसर : भारत में बढ़ती उम्र की आबादी (एजिंग) पर अक्सर चुनौतियों के तौर पर चर्चा की जाती है, लेकिन इससे आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और इनोवेशन के कई अवसर भी मिलते हैं। अगर सही नीतियों और निवेश का साथ मिले, तो आबादी में हो रहा यह बदलाव भारत के विकास में सकारात्मक योगदान दे सकता है। सबसे महत्वपूर्ण अवसरों में से एक है 'सिल्वर इकोनॉमी' का विकासय इसका मतलब है बुजुर्गों की जरूरतों और उनके खर्च करने के तरीकों से जुड़ी आर्थिक गतिविधियाँ। बढ़ती बुजुर्ग आबादी से हेल्थकेयर सेवाओं, दवाओं, हेल्थ इंश्योरेंस, सहायक उपकरणों, रिटायरमेंट हाउसिंग और बुजुर्गों की देखभाल की सुविधाओं की मांग बढ़ने की उम्मीद है। इससे रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं और हेल्थकेयर व सर्विस सेक्टर में निवेश को बढ़ावा मिल सकता है।

बढ़ती उम्र की आबादी, एक्टिव एजिंग (सक्रिय रूप से बुढ़ापा बिताने) और लंबे समय तक काम करने के मौके भी पैदा करती है। कई बुजुर्गों के पास कीमती अनुभव, हुनर और पेशेवर जानकारी होती है, जो आर्थिक उत्पादकता में योगदान दे सकती है। लचीले रोजगार, पार्ट–टाइम काम और कंसल्टेंसी जैसे कामों को बढ़ावा देने से इस मानव संसाधन का इस्तेमाल करने और निर्भरता का बोझ कम करने में मदद मिल सकती है। बढ़ती उम्र की आबादी हेल्थकेयर टेक्नोलॉजी, टेलीमेडिसिन, डिजिटल हेल्थ सर्विस और बुजुर्गों के अनुकूल बुनियादी ढांचे में इनोवेशन को और बढ़ावा दे सकती है। भारत में डिजिटल टेक्नोलॉजी के विस्तार से बुजुर्ग नागरिकों को बेहतर हेल्थकेयर सुविधा, फाइनेंशियल समावेशन और सामाजिक जुड़ाव का फायदा मिल सकता है।

एक और मौका कम्युनिटी डेवलपमेंट और सामाजिक भागीदारी में है। रिटायर हो चुके लोग अक्सर वॉलंटियरिंग, मेंटरिंग, पढ़ाने और समाज सेवा जैसे कामों के जरिए समाज में योगदान देते हैं। उनकी भागीदारी कम्युनिटी नेटवर्क को मजबूत कर सकती है और स्थानीय विकास की पहलों को सहारा दे सकती है। इसके अलावा, बुजुर्गों के अनुकूल घरों, ट्रांसपोर्ट और मनोरंजन की सुविधाओं की बढ़ती मांग से क्षेत्रीय विकास और इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार को बढ़ावा मिल सकता है। केरल और तमिलनाडु जैसे राज्य, जहां बुजुर्ग आबादी तेजी से बढ़ रही है, बुजुर्गों की हेल्थकेयर और देखभाल सेवाओं के

केंद्र बन सकते हैं। इसलिए, आबादी के बूढ़े होने को सिर्फ एक बोझ के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। सही प्लानिंग और मददगार नीतियों के जरिए, भारत अपनी बुजुर्ग आबादी को टिकाऊ और समावेशी विकास के लिए एक कीमती संसाधन में बदल सकता है।

भारत में आबादी के बूढ़े होने के सामाजिक–आर्थिक असर : भारत में आबादी का बूढ़ा होना एक अहम सामाजिक–आर्थिक मुद्दा बनता जा रहा है क्योंकि बुजुर्गों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आबादी में इस बदलाव का भारत की अर्थव्यवस्था, समाज और क्षेत्रीय विकास पर गहरा असर पड़ेगा। आबादी के बूढ़े होने का एक बड़ा आर्थिक असर 'बुजुर्गों पर निर्भरता अनुपात' (old & age dependency ratio) का बढ़ना है। इसका मतलब है कि काम करने वाली उम्र की आबादी को कितने बुजुर्गों का सहारा बनना पड़ता है। जैसे–जैसे बुजुर्गों की आबादी बढ़ती है, परिवारों और सरकारी कल्याणकारी व्यवस्थाओं पर आर्थिक बोझ भी बढ़ता है। आने वाले दशकों में पेंशन, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा पर होने वाले खर्च में काफी बढ़ोतरी होने की उम्मीद है। आबादी के बूढ़े होने का असर लेबर मार्केट (कामकाजी आबादी के बाजार) पर भी पड़ता है। अनुभवी कर्मचारियों के रिटायर होने से काम करने वालों की संख्या कम हो सकती है, जिससे कुछ सेक्टर में मजदूरों की कमी हो सकती है। ग्रामीण इलाकों पर इसका असर ज़्यादा होता है क्योंकि युवाओं के शहरों की ओर पलायन करने से अक्सर पीछे केवल बुजुर्ग आबादी ही रह जाती है, जिससे खेती की पैदावार और स्थानीय आर्थिक गतिविधियां कम हो जाती हैं।

हेल्थकेयर की मांग एक और बड़ी चिंता है। बुजुर्गों में डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, दिल की बीमारी और गठिया जैसी पुरानी बीमारियों के होने का खतरा ज़्यादा होता है। इसलिए, बुजुर्गों के लिए हेल्थकेयर सेवाओं, लंबे समय तक देखभाल की सुविधाओं और ट्रेंड हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स की जरूरत बढ़ रही है। इससे भारत के हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। सामाजिक रूप से, आबादी के बूढ़े होने से अकेलेपन, सामाजिक अलगाव और बुजुर्गों की उपेक्षा जैसी समस्याएं हो सकती हैं, खासकर शहरी इलाकों में जहां पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था कमजोर हो रही है। बुजुर्ग महिलाएं अक्सर ज़्यादा जोखिम में होती हैं क्योंकि उनकी उम्र लंबी होती है, आय की सुरक्षा कम होती है और विधवा होने की दर ज़्यादा होती है।

इन चुनौतियों के बावजूद, बुजुर्ग आबादी अपने अनुभव, समुदाय में भागीदारी और देखभाल करने की भूमिकाओं के जरिए भी योगदान देती है। इसलिए, भारत में नकारात्मक प्रभावों को कम करने और समावेशी सामाजिक–आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए हेल्थकेयर सिस्टम को मजबूत करना, सामाजिक सुरक्षा कवरेज का विस्तार करना और सक्रिय रूप से बुढ़ापा बिताने (एक्टिव एजिंग) को बढ़ावा देना जरूरी है।

आबादी का बूढ़ा होनाः भारत में टिकाऊ क्षेत्रीय विकास के लिए नीतिगत उपाय : भारत में आबादी का बूढ़ा होना विकास से जुड़ी एक बड़ी चिंता के रूप में उभर रहा है, जिसके लिए टिकाऊ क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित करने हेतु व्यापक नीतिगत उपायों की आवश्यकता है। आबादी में हो रहे इस बदलाव के कारण ऐसी नीतियों की जरूरत है जो संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने के साथ–साथ बुजुर्गों की सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को भी पूरा करें।

एक प्रमुख नीतिगत उपाय स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना है। सरकार को बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करना चाहिए, अस्पतालों में बुजुर्गों की देखभाल के लिए विशेष इकाइयां स्थापित करनी चाहिए और ग्रामीण तथा कम सुविधा वाले क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बेहतर बनानी चाहिए। स्वास्थ्य सेवाओं की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए 'नेशनल प्रोग्राम फॉर हेल्थ केयर ऑफ द एल्डरली' (NPHCE) जैसे कार्यक्रमों को और मजबूत किया जाना चाहिए। एक अन्य महत्वपूर्ण उपाय सामाजिक सुरक्षा और पेंशन कवरेज को बढ़ाना है। कई बुजुर्गों, विशेषकर ग्रामीण इलाकों और असंगठित क्षेत्र में रहने वालों के पास पर्याप्त वित्तीय सुरक्षा का अभाव है। 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना' (IGNOAP) जैसी पेंशन योजनाओं का विस्तार करने से बुढ़ापे में गरीबी को कम करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिल सकती है।

सक्रिय रूप से उम्र बढ़ने (active ageing) को बढ़ावा देना भी जरूरी है। नीतियों में बुजुर्गों को लचीले रोजगार के मौकों, कौशल विकास कार्यक्रमों और सामुदायिक भागीदारी के जरिए आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में शामिल रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे बुजुर्गों के अनुभव और ज्ञान का लाभ उठाने और उनकी निर्भरता कम करने में मदद मिल सकती है।

क्षेत्रीय योजना में उम्रदराज आबादी की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उम्र–अनुकूल बुनियादी ढांचा विकसित किया जाना चाहिए, जिसमें आसानी से सुलभ आवास, सार्वजनिक परिवहन, मनोरंजन की सुविधाएँ और डिजिटल सेवाएँ शामिल हों। ग्रामीण इलाकों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जहाँ युवाओं के पलायन के कारण बुजुर्गों की आबादी का अनुपात अक्सर बढ़ जाता है। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच और सामाजिक समावेश को बेहतर बनाने के लिए टेलीमेडिसिन, डिजिटल हेल्थकेयर प्लेटफॉर्म और सहायक उपकरणों जैसे तकनीकी नवाचारों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। 'माता–पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण–पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007' को प्रभावी ढंग से लागू करने और समुदाय–आधारित सहायता प्रणालियों को अपनाने से बुजुर्गों के कल्याण को मजबूत किया जा सकता है। ये नीतिगत उपाय भारत को आबादी की बढ़ती उम्र की स्थिति को संभालने और साथ ही टिकाऊ और समावेशी क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं।

निष्कर्ष : भारत में आबादी का बूढ़ा होना एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय घटना बनती जा रही है, जो स्वास्थ्य सेवा, जीवन स्तर और जीवन प्रत्याशा में बड़े सुधारों को दर्शाती है। हालांकि कई विकसित देशों की तुलना में भारत की आबादी अभी भी काफी युवा है, लेकिन बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। 'इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023' के अनुसार, 2050 तक 60 वर्ष और उससे अधिक उम्र की आबादी लगभग 347 मिलियन तक पहुंचने का अनुमान है, जो देश की कुल आबादी का पांचवां हिस्सा होगा। इस जनसांख्यिकीय बदलाव का क्षेत्रीय विकास, आर्थिक वृद्धि और सामाजिक कल्याण पर गहरा असर पड़ेगा।

आबादी के बूढ़े होने का असर पूरे भारत में एक जैसा नहीं है। केरल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश और पंजाब जैसे राज्यों में आबादी के बूढ़े होने की प्रक्रिया ज़्यादा आगे बढ़ चुकी है, जबकि उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में आबादी अभी भी काफी युवा है। इन क्षेत्रीय अंतरों के कारण हर जगह के हिसाब से अलग–अलग विकास रणनीतियों की जरूरत है। आबादी का बूढ़ा होना काम करने वाले लोगों की उपलब्धता, स्वास्थ्य सेवाओं की मांग, सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों और उपभोग के तरीकों को प्रभावित करता है। खासकर ग्रामीण इलाकों में, युवा आबादी के शहरों की ओर पलायन करने से चुनौतियां पैदा हो रही हैं, क्योंकि वहां पीछे केवल बुजुर्ग ही रह जाते हैं। साथ ही, बढ़ती उम्र को सिर्फ एक चुनौती के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। बुजुर्गों की बढ़ती आबादी से हेल्थकेयर सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स, इंश्योरेंस, सीनियर–केयर सुविधाओं और 'सिल्वर इकॉनमी' से जुड़े दूसरे सेक्टरों के विस्तार के मौके बनते हैं। बुजुर्ग लोग अपना कीमती अनुभव, हुनर और सोशल कैपिटल भी देते हैं, जो कम्युनिटी डेवलपमेंट और आर्थिक उत्पादकता में मदद कर सकते हैं।

क्षेत्रीय विकास को टिकाऊ बनाने के लिए, भारत को ऐसी सक्रिय नीतियां अपनानी होंगी जो हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करें, सोशल सिक्योरिटी कवरेज का दायरा बढ़ाएं, एक्टिव एजिंग को बढ़ावा दें और उम्र–अनुकूल माहौल बनाएं। जेरियाट्रिक केयर (बुजुर्गों की देखभाल), डिजिटल हेल्थकेयर, बुजुर्ग कल्याण कार्यक्रमों और समावेशी शहरी व ग्रामीण प्लानिंग में निवेश बहुत जरूरी होगा। इसके अलावा, क्षेत्रीय विकास नीतियों में अलग–अलग राज्यों में बुजुर्ग आबादी की विविध जरूरतों को पूरा करने के लिए डेमोग्राफिक पहलुओं को भी शामिल किया जाना चाहिए।

निष्कर्षतः आबादी का बूढ़ा होना भारत के लिए एक चुनौती और एक मौका, दोनों है। असरदार प्लानिंग और नीतिगत कदमों से, देश आने वाले दशकों में डेमोग्राफिक एजिंग को समावेशी, लचीले और टिकाऊ क्षेत्रीय विकास का जरिया बना सकता है।

संदर्भ :

1. UNFPA India (2023). India Ageing Report 2023.
2. Government of India, Census of India Reports.
3. National Statistical Office (NSO), Elderly in India Report.
4. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India.
5. United Nations (2023). World Social Report: Leaving No One Behind in an Ageing World. New York: United Nations.
6. United Nations Department of Economic and Social Affairs (UNDESA). World Population Prospects.
7. World Health Organization (WHO). Ageing and Health Report.
8. World Bank. Population Ageing and Economic Growth.
9. Bloom, D. E., Canning, D., & Fink, G. (2010). Implications of Population Ageing for Economic Growth.
10. Lee, R., & Mason, A. (2011). Population Aging and the Generational Economy. Edward Elgar Publishing.
11. Government of India. Census of India Reports.
12. National Statistical Office (NSO). Elderly in India Report.
13. HelpAge India. State of Elderly in India.

•